प्राचीन भारत में आयुर्वेदिक शिक्षा

डॉ0 विजय कुमार

'नित्य प्रति चलने से, कभी एक क्षण भर के लिये भी न रूके इसे आयु कहते हैं। आयु का ज्ञान जिस शिल्प या विद्या से प्राप्त किया जाता है, वह आयुर्वेद है। यह आयुर्वेद मनुष्यों की भाँति वृक्ष, पशु–पक्षी आदि के साथ संबंधित है। इसलिये इनके विषय में भी संहिताएँ बनाई गयी। (अग्निपुराण के अनुसार सुश्रुत के प्रति धन्वन्तरि ने मनुष्य, अश्व, गौ, गज, वृक्ष के लिये भी आयुर्वेद कहा था)। ज्ञान का प्रारंभ सृष्टि से पूर्व हुआ ऐसा भी मानने वाले विद्वान हैं। उनके विचार से आयुर्वेद पहले उत्पन्न हुआ और उसके बाद प्रजा उत्पन्न हुयी। आयु के लिये क्या उपयोगी है, क्या अनुपयोगी; यह जानना बहुत आवश्यक है। इस प्रकार आयु संबंधी ज्ञान शाश्वत है। केवल इसका बोध और उपदेश मात्र ही ग्रंथों में कहा गया है। जिस प्रकार शिशु के उत्पन्न होने से पूर्व माता के स्तनों में दूध आ जाता है, उसी प्रकार मनुष्य या सृष्टि के उत्पन्न होने से पूर्व परमात्मा ने जीविका के साधन बनाए थे। इन साधनों में आयुर्वेद भी था। इसीलिये यह प्राचीन एवं शाश्वत है।